व्यक्ति और परिवार का सम्बन्ध

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

मानव अकेला जन्म लेता है और अकेला मरता है। संसार में वह परिवार और समाज के ताने–बाने में फंसा रहता है। परिवार एक इकाई है। जिसमें अनेक लोग रहते हैं। प्राचीनकाल में भारत में संयुक्त परिवार प्रथा थी किन्तु धीरे–धीरे यह प्रथा टूटती जा रही है। परिवार सहयोग और पारस्परिकता की आधारशिला है। पाश्चात्य देशों में परिवार व्यवस्था इतनी सुव्यवस्थित नहीं है जितनी हमारे देश में है। हमारे देश में एक परिवार में पहले सैंकड़ों लोग एक साथ रहते थे। परिवार दादा–दादी, माता–पिता, भाई–बहिन, चाचा–चाची आदि सम्बन्धों से जुड़ा रहता है। परिवार से ही बच्चे संस्कार सिखते हैं। परिवार व्यक्ति को पहचान देता है। जन्म लेते समय सभी बच्चे एकसमान होते हैं। किन्तु जिस परिवार में जन्म लेते हैं वैसा संस्कार, धार्मिक रीति–रिवाज आदि पहचान उसे जन्म के साथ प्राप्त हो जाती है। एक कहावत है– **होनहार विरवान के होत चिकने पात** अर्थात् जिस वृक्षके पते चिकने होते हैं उस वृक्ष का विकास अधिक होता है। अच्छे परिवार में अच्छी आदतें और बुरे परिवार में बुरी आदतें बच्चों में पड़ जाती है। जिस परिवार के लोग नशा करते हैं प्रायः उस परिवार के बच्चे भी नशा करने लगते हैं। परिवार में ही बच्चे यह सीखते हैं कि समय से उठना चाहिए, समय से भोजन करना चाहिए, समय से अध्ययन करना चाहिए, सयम से हर काम करना चाहिए। परिवार नागरिकता की प्रथम पाठशाला कहा जाता है।

भारत की अधिकांश आबादी गांवों में रहती है। परिवार में बड़े–छोटे का और छोटे–बड़ों का सम्मान करते है। माता–पिता की सेवा करना पुत्र का प्रथम कर्तव्य होता है। माता–पिता की सेवा ईश्वर सेवा होती है। पुत्र को माता–पिता के पास रहकर बहुत सांत्वना मिलती है। जब कहीं बाहर से पुत्र या पुत्री माता–पिता के पास आते हैं तो उन्हें अपनत्व प्राप्त होता है। सामूहिक परिवार में कुछ लोग नौकरी करते हैं, कुछ लोग व्यापार करते हैं और कुछ लोग घर

पर रहकर कृषि कार्य करते हुए माता–पिता की सेवा करते हैं। सब मिलजुलकर जीवन यापन करते हैं।

सामूहिक परिवार तभी चलता है जब घर का मुखिया सबके साथ समान व्यवहार करता है। किसी को यह महसूस न हो कि मुझे कोई वस्तु कम या किसी को ज्यादा मिली। किसी सामूहिक कार्यक्रम में परिवार के सभी लोग मिलकर कार्य कर लेते हैं। किसी के ऊपर कार्य का बहुत भार नहीं पड़ता था। पहले जिस परिवार में जितने अधिक लोग रहते थे वह परिवार अपने आपको बहुत अधिक शक्तिशाली मानता था। अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता यह कहावत यह बताती है कि अकेला आदमी किसी कार्य को करता है तो कई दिनों में वह कार्य पूरा होता है। यदि कई लोग मिलकर उस कार्य को करें तो कार्य शीघ्र ही पूरा हो जाता है। इसीलिए कहा गया है कि समूह में शक्ति होती है। एक लकड़ी को अकेले तोड़ा जा सकता है किन्तु लकड़ी के एक बण्डल को नहीं तोड़ा जा सकता। परिवार सबसे बड़ा धन है। किन्तु आज के युग में न्यूक्लियर फैमिली के कारण संयुक्त परिवार प्रथा टूटती जा रही है।

छोटा परिवार हमारी संस्कृति के अनुकूल नहीं है। यह पाश्चात्य सभ्यता की देन और प्रभाव है। जैसे पाश्चात्य देशों में पति–पत्नी और बच्चे ही परिवार के सदस्य होते हैं। जैसे ही बच्चा बड़ा होता है विवाह करके वह अपने परिवार को लेकर अलग हो जाता है। यही प्रथा आजकल अपने देश में भी देखी जा रही है। जैसे ही बच्चे की शादी हुई, वह अपनी पत्नी को लेकर अलग राह अपना लेता है। वह यह सोचता है कि मेरे द्वारा कमाया गया पैसा केवल पत्नी और बच्चे पर ही खर्च हो। यह सोच ठीक नहीं है जिस माता–पिता ने बच्चों को अनेक कष्ट सहकर पाल–पोषकर बड़ा किये है, उनकी भी कुछ अपेक्षाएं होती है। किन्तु जैसे ही बच्चा अपने पांव पर खड़ा हुआ वह अपने को परिवार से अलग मानने लगता है और अपने को परिवार से अलग कर लेता है। भारत देश में वसुधैव कुटुम्बकम् का सूत्र बहुत प्राचीन है। केवल पारिवारिक सदस्य ही नहीं बल्कि और अन्य लोग भी यदि आ जाये तो हमारे देश में उनका स्वागत और सत्कार हुआ है।

आज का मानव इतना असहनशील हो गया है कि वह किसी की बात को सहना ही नहीं चाहता। परिवार में माता–पिता या अन्य श्रेष्ठ लोग यदि बच्चे को उसके किसी आचरण के

लिए कुछ सुझाव देते हैं या उसको डाटते हैं तो बच्चा इसको अपनी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल मानता है। जबकि उनका उद्देश्य यह होता है कि बच्चे में संस्कार आवे और उसके बुरे विचार दूर हो।

पहले परिवार के बुजुर्ग या श्रेष्ठ लोग किसी को कुछ कह देते थे तो सभी उनकी बात का आदर करते थे। उनकी बात का विरोध करने का साहस किसी में नहीं रहता था। इसलिए परिवार संयुक्त रूप से बना रहता था और प्रगति करता था। परिवार के टूटने का दूसरा मुख्य कारण है त्याग की भावना का अभाव। आजकल परिवार के सदस्यों में त्याग की भावना का अभाव दिखाई देता है। पहले लोग सीमित आवश्यकता में ही अपना जीवनयापन कर लेते थे जिसके कारण परिवार एक छत के नीचे संयुक्त रूप से रहता था।